

काजी-उद्धार

श्रीहरिः

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

!! जय गौर !!

* श्रीगुरवे नमः *

मंगलाचरण

(स्थान—महाप्रभुका मन्दिर । गुरुदेव कुछ शिष्योंके साथ आरती कर रहे हैं ।)

अपनो तन मन धन सब वारूँ ।
महाप्रभु चैतन्यदेवपर तन मन············ ।
चलत फिरत और सोवत जागत, गौर ही गौर पुकारूँ ।
अपनो तन······
गौर अंगकी मोहनी मूरत भर भर नयन निहारूँ ।
प्रेमके पाँसे फैंक फैंककर जीत ही जीत पुकारूँ ।
अपनो तन······
लखूँ रास, सुख विलास, मनकी आश, करूँ प्रकाश,
लीलाधारी, कुंजविहारी, हरी मुरारी, असुरारी ।
तन मन धन सब वारूँ

लजोई रहै रुचि को कहै कछु कमाल की है ॥ हनुमान नखावली पै तिय के अवली परै फीकी प्रबाल की है। दवि दामिनी जात प्रभा निरखे कितनी छबि मंजु मसाल की है ॥ १९ ॥

को रति है अरु कौन रमा उमा छूटी लटैं निचुरै गुंदी मोती। हाय अनूठे उरोज उठे भये मैन तुठे अरु और है को तौ ॥ त्यौंकबि ग्वाल नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूप की सुन्दर ज्योती। मोरति नार मरोरति भौंहन चोरति चित्त निचोरति धोती ॥ २० ॥

कवित्त।

कोऊ कहै है कलङ्क कोऊ कहै सिंधुपङ्क कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भास की। कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै राहुरद कोऊ कहै नीलगिरि आभा आस पास की ॥ भञ्जन जू मेरे जान चन्द्रमा को छील बिधि राधे को बनायो मुख सोभा के बिलास की। ता दिन तें छाती छेद भयो है छपाकर के वार पार दीखत है नीलिमा अकास की ॥ २१ ॥

खरी खगड तीसरे रँगीली रंगरावटी में तकि

ताको ओर छकि रह्यो नँदनन्द है। कालिदास बीचन दरीचन ह्वै झलकत छवि की मरीचन की झलक अमन्द है॥ लोक देखि भरमै कहां धौं यह घर में सु रगमग्यो जगमग्यो ज्योतिन को कन्द है। लालन की माल है कि ज्वालन की जाल कि चामीकर चपला कि रवि है कि चन्द है॥ २२॥

प्यारी तुव अङ्गनि की उमगी सुबास सोई लागी हरि चंदन में वृन्दरा के घर में। मालती लतावन में सेवती गुलावन में मृगमद घनसार अम्बर अगर में॥ उछल अछेह छवि छाई पुनि छिति पर देखियत सोई मन मानिक मुकर में। चंपक बनी में चिरागन की अनी में चारु चंद को कला में चपला में चामीकर में॥ २३॥

वह जो प्रकाशमान लागत बिभावरी में ये तो आठो जामहूं बिमल ज्योति धारिये। वाके अङ्क राजत कलङ्क रङ्क राव सदा याके हृदये में बसै मोहन मुरारिये॥ वाको बपु छीन दिन-प्रति अवलोकियत याके अंग पूरन प्रभा सौं प्रेम प्यारिये। कहै कविराम छविधाम प्रान

प्यारी ये जू राधे मुखचंद पै शरद चंद वारिये ॥

सुन्दर बदन राधे सोभा को सदन तेरो बदन बनायो चारबदन बनाय के। ताकी रुचि लेन को उदित भयो रैनपति राख्यो मति मूढ़ निज कर बगराय के॥ कहै कवि चिंतामनि ताहि निसि चोर जानि दियो है सजाय पाकसासन रिसाय के। याते निसि फेरि अमरावती के आस पास मुख में कलङ्क मिस कालिमा लगाय के॥ २५॥

जो पै मुख प्यारी को बताऊं चारु चंद सो मैं तो पै रहै रातही मैं ज्योतिन के जोहिनी। याको तो दिवाकर के तेजहू तें तेज तेज जो पै कहूं भानु तौ न रैन होय मोहिनी॥ ग्वाल कवि याते मुख सुखमाहिं मुख है जू सो मुख सो सोई श्रति आनँद की बोहिनी। आंख ते न देखी सुनी कान ते न ऐसी जोति जैसी वृषभानु की दुलारी मनमोहिनी॥ २६॥

सोभा पुञ्ज सानी राधा रानी को सुमुख देख चौंक चतुरानन सुचित्त में सराहै है। मेरी सृष्टि रचना में चारु एक चंद्रमा है देखो सम है

न याके बुद्धि यों उमाहे है ॥ कहै तोषहरि तौले तबहीं तुला पै दोऊ एक तो अचल दूजो नभ अवगाहे है । सोच सरमाय कै सु मानो तारो तोमन को नाय नाय तामे ताहि तुल्य कियो चाहे है ॥ २७ ॥

कामिनी मदन गज गामिनी बिलोकि आई दामनी न पाई है गुराई गोरे गात सी । बिधु मानसर तें सरद ससिकर तें रसिस के मुकर तें अधिक अवदात सी ॥ श्रीपति सुजान परखत हरखत मन नैनन को सितासी नवल नव बात सी । जाही हारि जात सी जुही बिदारि जात सी बिकास बारिजात सी सुबास पारिजात सी ॥

टारि जात अलि को नेवारिन के आरि जात लागि जाति सहज बयारि जाके तन को । श्री· पति सुजान जाही जूथिका बिदारि जाति महिमा बिगारि जात खारिजात बन को । झारि जाति मालती गुलाब मद मारिजात सौरभ उतारि जात केतकी सघन को । बारिजात तगर अगर धूप हारि जात राइ पारिजात पारिजात के सुमन को ॥ २८ ॥

वारि जात वारि जात पारिजात पारिजात मालती बिदारि जात सौधन की झरी सी। माखन सी मैन सी मुरार मखमल सम कोमल सरस तरु फूलन की छरी सी॥ गडगडी गरुई गुराई गोरी गोरे गात श्री पति बिलौर सीसी ईंगुर सों भरी सी। बीज थिर धरी सी कनक रेख करी सी प्रवाल दुति हरी सी ललित लाल लरी सी॥ ३० ॥

गोरी महा भोरी तेरे गात की गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधा सी। श्रीपति कमल की कमानी मखमल की बदखसानी लाल की ललाई लागी मुधा सी॥ सोम निदरत सी प्रकाश को हरत जोम रोम रोम छुरत छपायन की छुधा सी। सुखमा को औन भई शीतल को चैन भई पौवन की मैनमई नैनन की सुधा सी॥ ३१ ॥

एहो ब्रजराज एक कौतुक बिलोको आज भानु के उदै में वृषभान के महल पर। बिनु जलधर बिनु पावस गगन धुनि चपला चमंकै चारु घनसार थल पर॥ श्रीपति सुजान मन

मोहन मुनीसन को सोहै एक फूल चारु चंचला अचल पर। तामें एक कीर चोंच दाबे है नखत जुग शोभित है फूल श्याम लोभित कमल पर ॥ ३२ ॥

घनसार दीपक सिखा सी चपला सी चारु चंपक लता सी नव भानु की बिभा सी है। नैनन चकोरन को सींचत सुधा सी कलानिधि की कला सी मुख सुखमा प्रकासी है ॥ लखि ललचान्यो रूप करत बखान जान्यो श्रीपति सुजान काशी नगर निवासी है। शंभु सालिका सी सुरपाल बालिका सी बाल माल लाल कासी हरतालिका उपासी है ॥ ३३ ॥

चोंथतें चकोरि चहुं ओरि जानि चन्दमुखी रही बचि डरनि दसन दुति दम्पा के। लीलि जाते बरही बिलोकि बेनी बनिता की गुही जो न होती तो कुसुम सर कम्पा के ॥ राम जो सुकबि ढिग भौंहें ना धनुष होती कीर कैसे छाड़ते अधर बिम्ब झम्पा के। दाख के से झौरा झलकत ज्योति जोबन की भौंर चाटि जाते जो न होती रंग चम्पा के ॥ ३४ ॥

बदन सुधा करै उधारत सुधा करै प्रकाश बसुधा करै सुधा करै सुधा करै । चरन धरा धरै मृनालज धरा धरै सु ऐसे अधरा धरै ये बिम्ब अधरा धरै ॥ पैनै दृग हा करै निहारत कहा करै सु बेनी कविता करै त्रिबेनी समता करै । सुरति में सी करै सुमोहनै बसी करै बिरञ्चि हू जसी करै सु सौतिन मसी करै ॥ ३५ ॥

मदन तुका सी किधौं राधे कुन्दका सी मनो कञ्ज कलिका सी कुच जोरी हविका सी है। गांसी भरी हांसी मुखमासी मोह फांसी मद जोबन उजासी नेह दीया की सिखा सी है। जाको रति दासी रस रासि है रमा सी कौन तिलोत्तमा ऐसी रूप सदन बिकासी है। काम की कला सी चपलासी कबिनाथ किधौं चम्पक लता सी चारु चन्द्रिका प्रकासी है ॥ ३६ ॥

कुन्दन से अङ्ग नव जोबन तरङ्ग राजै उरज उतंग लङ्क छीन छबि देत है। बादले की सारी दर दामन किनारीदार बदन की ज्योतिमानो हूसन समेत है ॥ सोभनाथ निरखि सुजान अँगिरान प्यारी दोऊ कर जोरि मुख मोरि

छित चेत है ॥ मदन मलाह के सलाह सों उछाह भरी मानो रूप सागर को ठाढ़ी थाह लेत है ॥ ३७ ॥

आनन की उपमा जो आनन को चाहै तऊ आन न मिलैगी चतुरानन बिचारे को। कुसुम कमान के कमान को गुमान गयो करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को ॥ गिरधर-दास दोऊ देखि नैन वारिजात वारिजात वा-रिजात मान सर वारे को। राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप जात रूप जातरूप जातरूप वारे को ॥ ३८ ॥

गोरी के हथोरी शिव कबि मेहँदी के बिंदु इन्दु ती को गण जाके आगे लगै फीको है। अँगुठा अनूप छाप मानो ससि आयो आप कर कंज के मिलाप पात तजि हीको है॥ आगे और आंगुरी अँगूठी नीलमनि जुत बैठो मनो चाय भरो चेटुआ अली को है । दबि के छला सों कोमलाई सों ललाई दौरि जीतत चुनी को रँग छोर छिगुनी को है ॥ ३९ ॥

उज्जल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा-मण्डल चवारो चन्दमण्डल की चोटहीं । भी-तरहू लालन की जालनि विशाल जोति बाहिर जुन्हाई जगी जोतिन के जोटहीं ॥ बरनति बानी चौंर ढारति भवानी कर जोरे रमा रानी ठाढ़ी रमन की ओटहीं । देव दिगपालनि की देवी सुखदाइन ते राधा ठकुराइन के पायन पलो-टहीं ॥ ४० ॥

देव महा सुन्दरी त्रिलोक सुन्दरी के दृग वृन्दारक वृन्दनि को मन्दर उदार होत । लागत चरन सरनागत नरन अनुरागत अरुन रूप उ-पमा अपार होत ॥ देखि देखि दीन दुखी होत बसुधाधिप बुधाधिपति ऊपर सुधा सहस्र धार होत । एक ओर कुटिल कटाच्छ ही की कोर कोटि लच्छ रच्छ ससपच्छ जरे लखि छार होत॥४१॥

आई बरसाने तें बुलाई वृषभानुसुता नि-रखि प्रभानि प्रभा भानु की अथै गई । चक चकवानि के चुकाए चक छोटिन सो चौंकत चकोर चकचौंधी सों चकै गई ॥ नन्द जू ... नन्द जू के नैननि अनन्द मई नन्द जू के म-

न्दिरनि चंद मई छै गई। कञ्जनि कलिनमई कुञ्जन अलिनमई गोकुल की गलिन नलिनमई कै गई ॥ ४२ ॥

गोरे मुख गोहरें सु हँसत कपोल बड़े लोचन विलोल बोल लोने लीन लाज पर। शोभा लागे लाल लखि शोभा कवि देव छबि गोभा सो उठत रूप शोभा के समाज पर ॥ बादले की सारी दरदामन किनारी जगमगी जरतारी झीनी झालरि के साज पर। मोती गुहे कोरनि चमक चहुं ओरनि ज्यों तोरनि तरैयन की तानी द्विज-राज पर ॥ ४३ ॥

फटिक सिलानि सों सुधाखो सुधा मन्दिर उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगै अमंद। बाहिर तें भीतर लौं भीति ना दिखैये देव दूध को सो फेन फैल्यो आंगन फरसबंद ॥ तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ो झिलमिल होति मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरन्द। आरसी से अम्बर में आभा सी उँज्यारी लागै प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द ॥ ४४ ॥

जोतिन के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्र-

काश के समूहनि उजासनि के आकरनि। फटिक अटूटनि महारजतकूटनि मुकतमनि जूटनि समेटि रतनाकरनि॥ छूटि रही छोन्ह जग लूटि रही दुति देव कमलाकरनि फूटि दीपति दिवाकरनि। नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद ससि सामुद विनोद चहूं कोद कुमुदाकरनि॥ ४५॥

छीर की सी लहरि छहर गई छिति मांह जामिनी की ज्योति भामिनी को मानु ऐठो है। ठौर ठौर छूटत फुहारे मानो मोतिन के देव बनु पाको मनु काको न अमैठो है॥ सुधा को सरोवर सो अम्बर उदित ससि मुदित मराल मानो पैरिबे को पैठो है। बेल के बिमल फूल फूलत समूल मनो गगन ते उड़ि उड़गन जनु बैठो है॥ ४६॥

मांग सिँदुरारी तन तरुन अरुन जोति बेंदी रवि बन्यो छवि पुंज उघरतु है। सघन जघन कुच सकुच दुबीच दब्यो उचकि उचकि लङ्क लचक्यो परतु है॥ जोबन बनक बने तन में तनक देव भूषन कनक मनि आभा उभरतु है।

बेसरि को मोती सुधाबिन्दु सो चुवत मुख बुन्दु सो उवतु बूड़ि बूड़ि उछरतु है ॥ ४७ ॥

आनन समान प्यारो कहै कबि हनुमान उपमान आनन मो चित्त में पगत है। सारस को सारस न देखियतु आठो जाम आरस मैं आरम सुभांइ उमगत है। भूपर न भूपर न बि-रच्यो बिरञ्चि दूजो भा न ऐसो भान मैं महान जो जगत है। बिम्ब बसुदाकर सु मोह्यो वसु-दाकर सुधाकर सुधाकर सुधाकर लगत है ॥४८॥

कैधों सप्तरिषिन के मखन की सिद्धि पुञ्ज है स हंस चखन के मनिन की जोत है। चपल चमक की चहूंघा चक चौंधि कौंधे नेक हँसे दा-ड़िम दसन दुति होत है। जगर मगर जागे स-गर बगर चारु चाहि चाहि चक्रित चकोरन की गोत है। दुगुनो दिनेस तें चतुरगुनो चन्दहू तें हनुमान प्यारी तेरो आनन उदोत है ॥ ४९ ॥

पलका तें पद भौन भूमि पै धरत नेक झलका परत ततकाल पग तल मैं। नाइनि गुलाब झांवों झांवति जो, हरे झांई परे आनन झँवाई परे बल मैं ॥ हनुमान कसमीर आदि तें अलेपतहू जबी

रहै आपने ही अंग परिमल मैं । सुरजा में नाग-
जा में नागजा में जलजामे सुकुमार देखी वृष-
भानुजा सकल मैं ॥ ५० ॥

बांकी चारु चन्द्रिका बिराजै भाल बांकी
खौरि बांकी भौंह चञ्चल चितौन चख बांकी है ।
बांकी नकबेसरि मधुर मुसक्यानि बांकी कहै
हनुमान बांकी अधरललाकी है ॥ सुख रासि
भूखन सिंगार चन्द्रकला कीन्हे बांकी परजङ्क
बैठी मूरि करुना की है । झुकि झुकि झूमि झूमि
झांकी करैं देव वधू कहैं अनुपम सिरी राधिका
की झांकी है ॥ ५१ ॥

कर जोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँमोर लीन्हे
चौंर चतुराननी करत छवि छाकी है । छत्र लै
नछत्रपतिनी हू नचै रंभा ठाढ़ी मकर पताकी
बारी कलपलता की है ॥ जमलाना राधिका सी
कमला है हनुमान कौन कहै रसना फनेस हू
की थाकी है । तलातल बितल रसातल महातल
की अतल सुतल कीने पगतल ताको है ॥ ५२ ॥

अँमर अतर चोवा अँबर सो चुनि चुनि
ल्याइ सहचरी सौंधो जाति न्यारी न्यारी को ।

सुबरन संपुटनि आनी है रतन मनि पुहुप स-
मूह देव आने बन क्यारी को ॥ मन्द हास सुन्द-
री के भए सब मन्दद्युति चन्दहू तें उदित अमन्द
दुति प्यारी को। पूनो सो नखत जाल नूनो सो
ममाल पुञ्ज सहजही दूनी दुति पून्यो की उ-
ज्यारी को ॥ ५३ ॥

सोने में सुरंग सब वैसई लसत अंग जग
मग जोबन जवाहिर सो संग ताम। रूप तरु
काठ काम कन्दुक से सोहैं कुच चन्द्रमा से आ-
नन अमन्द दुति मन्द हास। सोभा की निकाई
देव काम की निकाई हूते नीके भए भूषन भ्र-
मर भमैं आस पास। चौगुनी चटक तन चीर
की चटक हू तें सौगुनी सुगन्ध तें शरीर की स-
हज बास ॥ ५४ ॥

चोवा सों चुपरि केशवेमरी सुरङ्ग अङ्ग के-
सरि उबटि अन्हवाई है गुलाब सों। अतर ति-
लौंछि आछे अम्बर लै रोंछि औंछि छतिया अँ-
गोछि हँसि हँसि रस भाव सों ॥ कटि मृगराज
कैसी मुख है मयङ्क मानो तीखे दृग देव गति
सीखी मृग साव सों। पैन्हे पीरो चीर चारु

चौकी पर ठाढ़ी भई चान्दनी सी प्यारी पै उँ-
ज्यारी महताब सों ॥ ५५ ॥

भोजन कै भामिनी भवन बीच ठाढ़ी भई चूनी मे चरन चारु चौकी रङ्ग मेज पर। पन्नन के पानदान पानन की बीरी भरि नीरी करि दीन्ही लीन्ही मन को मजेज पर॥ फूलन के हार भरे भौरन के भार देव आली पहिराए ते सो-हाए तन तेज पर। मौ सौ ससि को सो आस पास तें उठो सो करि आनि बैठी सीसा के म-हल सोंधी सेज पर॥ ५६ ॥

सहज बिलोकि फँसि जात मन कैसी होहू मन्द मुसुकानि बानी फूल से भरे परैं। द्विज बलदेव रंग सोने मे सहसगुनो जीवन को लाभ लहि हरखि हरे परैं॥ सुचि सुकुमार प्रभा भार से सरल मई राजित सुगन्ध परिमल केतरे परैं। ससि सम आनन को जानन प्रमानन पै सानन बिलोकि मृग कानन डरे परैं॥ ५७ ॥

जाने भेद कबिताई गौरव गहे रहत परम प्रसन्न मुख हास छबि कूँ रच्यो। द्विज बलदेव कहैं कञ्चन लतासी चारु चन्द ज्यों उदित भ-

रिरूप रस च्वै रह्यो ॥ आलस कछुक अँगिराय झेलिसी करत ललित बसीकरन बीजवर वै रह्यो। आई है तरुनताई याहि तें उचौहैं कुच सुबुधि सुगन्ध को प्रकाश अंग ह्वै रह्यो ॥ ५८ ॥

राजत रंगीली रंगभौन रसमाती तहां जागत झरोखन तें जोतिन को वृन्द है। ज्वालामुखी मन्दिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधों स्वर्ग सैल की गुहा में प्रभा कन्द है ॥ भन रघुनाथ लोग लखत बिचारि मन तारागन चन्द है कि भानु है कि छन्द है। चन्दहू तें दूनो दीप्त कन्द सदा पूनो सम होत है न ऊनो मुख बाला बाल चन्द है ॥ ५९ ॥

मृदु मखतूल तूल कमल गुलाब फूल मखमल सेज पै सम्हारि पाय धरती। कच कुच भारन सों दर चलहारी वेग धारत में कज्जल महावर को हरती ॥ भनै रघुनाथ हे स्वरूप सुख सोभा धाम निज मृदुता सों रति रम्भा को निदरती। अति सुकुमारी प्राणप्यारी रति रङ्ग समै कैसे प्राणप्यारे को निसङ्क अङ्क भरती ॥ ६० ॥

सुन्दर सुरङ्ग नैन सोभित अनङ्ग रङ्ग अङ्ग

अङ्ग फैलत तरंग परिमलके। बारन के भार सुकुमारि को लचत लङ्क राजै परजङ्क पर भीतर महल के॥ कहै पद्माकर बिलोकि जन रीझैं जाहि अम्बर अमल के सकल जल थल के। कोमल कमल के गुलाबन के दल के सुजात गड़ि पायन बिछौना मखमल के॥ ६१॥

सारी जरतारी सीस भारी छबिवारी प्यारी न्यारी जोति होति कछू रति सी छपाय जात। सुधि बिसराय ललचाय मुसुक्याय नाथ नेह रापिबे को हिये भूमि सी नपाय जात॥ हेम की सी बेली अलबेली जो धरत डग काँपि जात लङ्क उर मङ्कन कँपाय जात। दबि जात दामिनि दबकि जात चंद शोभा तपि जात बाम काम अंगनि समाय जात॥ ६२॥

केसरि कलित पचतोरिया ललित लाल लहँगा लसत लङ्क लोने पर घेरदार। जगमगे जड़ित जड़ाऊ पग पायजेब पङ्कज प्रभनि प्रभा पांवड़े गड़ेरदार। सदानंद सुंदर सघन घुघुरारे कच कंचुकी पै डारे अहिकारे मनो फेरदार॥ ऐंड़दार ऐननि मरोरदार तोरदार करत कजा की कजरारे नैन कोरदार॥ ६३॥

चंद प्रतिबिम्ब ऐसो जानि परै जाके आगे नाथ छवि आनन अनूप ब्रह्मरानी के। लोचन कुरंग जलजात मीन खञ्जन के रञ्जन रसीले मद भञ्जन भवानी के॥ और सब अंग की नि-काई मैं कहां लौं कहौं अंगन की जोड़ कौन राधा ठकुरानी के। प्यारी के चलत ऐसे लसत धरा में जैसे पांवड़े परत हैं बनात सुलतानी के॥ ६३॥

जोवन उँजारी प्यारी बैठी रंग रावटी में मुख की मरीचें वो दरीचें बीच झलकैं। भूधर सुकवि बांकी भौंहैं मन मोहैं खरी खञ्जन सी आखैं मन रञ्जन वै पलकैं॥ सीसफूल बेंदी बंदी बीरी और बंदन की चंदन की छवि हिये बीच बीच झलकैं। कोरवारी चूनरी चकोरवारी चि-तवनि मोरवारी बेसर मरोरवारी अलकैं॥६४॥

भृकुटी तनी को लट नागिन फनी को देव प्यारे लखि नीको लगै फूल्यो कंज फीको है। मैन कमनी को नैन बान की अनी को चोखे चैन रजनी को हौस हुलसन नीको है॥ रूपरस नीको कहा रमा रुकमनी को गजगति गमनी को

सौब सौव मुरली को है। बेनी बंद नीको रूख हास मंद नीको मुख चंदहू ते नीको वृषभान नंदनी को है ॥ ६५ ॥

गरब गुरज पै चढ़ाई तोप कोप करि सौतिन जखीरा कियो जोबन जमा को है। भनत कविन्द अभरन भार भारी भट नूपुर नगारे नौबतीन को भमा को है ॥ मैंन गढ़पति आगे लड़े नैन मैन दैके छूटत कटाच्छ बान लागैं उर जाको है। हांको चहुघां को करि प्यारो लेन चाहै प्यारी तेरो रूप गढ़ ग्वारियर हू ते बांको है ॥ ६६ ॥

रात हरी चांदनी बिलोकिबे को रनिवास सगरी बुलाई मोद मन्दिर मैं भरि गो। रघुनाथ ता समै को सोभा को समाज देखि रीझि रह्यो मोपै न बखान कछु करि गो ॥ घूंघट के खुलत दुलहिनी के आनन तें दसहू दिसान मैं प्रकाश ऐसो भरि गो। टरिगो गुमान तम सौतिन के जी को भट तारन समेत तारापति फीको परिगो ॥ ६७ ॥

अङ्ग तेरो केसर सो करिहां केसरी कैसो

कीसन की सर कैसे करि सकै को तमे । कहै कवि गङ्ग आछे छवि सों छबीले नैन नीलेज म लिन ऐसे नाहीं देखि होत मैं ॥ कहे हे अहीरी तू धौं इहो कछू जानति है काके भाग औतरी है तो सो तेरे गात में । तरुनी तिलक नन्द-लाल त्यों तिलक ताकि तो पर हौं वारों तिल तिल कै तिलोतमैं ॥ ६८ ॥

कवि पजनेस पुन्य परम बिचित्र भूमि कै-तिक फनूस झाड़ जोतें जरै ज्वाला सी । करत प्रदोष व्रत एजन किसोरी गोरी डरें करि आ-रती उजेरें सील माला सो ॥ मुकुर नवीन तें निहारि वर बिन्द नीको भिदुरावली सदीपदान वहु बाला सी । मानो व्योम गंगा की गँभीर धीर धरा धसी दीपक चढ़ावे देवकन्या दीप माला सी ॥ ६९ ॥

रङ्ग भरी रस भरी सुन्दर सुगन्ध भरी सुख भरी पैन ऐन नैन मैनका सी है । दर्पन सी देह तैसी नेह की नई नवेली व्रज बनितान ऐसी सुरपुर बासी है ॥ आलम सुकवि लोने सोने के सरोजहीं तें फूलही के भारे भर पान की लता-

सी है। चन्दन चढ़ाय चारु चांदनी सी छाय रही चन्द्रमा सी मोती सी चमक चन्द्रमा सी है ॥ ७० ॥

चारु मुख चन्द ते अमन्द कला दीपति है रूप सुधा हन्दन के बुन्द फुटि के रहे। चिरगंध गलित मदन्ध अन्ध चञ्चरीक मन्दिर के अन्दर चहूंधा जुटिके रहे ॥ घूंघट के पट में लपेट रह्यो जात जाल सौतिन विसाल बिष घूंटि घूंटि के रहे। एक छिन अच्छन छबीली छबि देखनि को गैलनि में छोह भरे छैल छुटि के रहे ॥ ७१ ॥

अङ्ग नई जोति लै बरङ्गनो विचित्र एक आंगन में अङ्गना अनङ्ग कैसी ठाढ़ी है। छबि की सी उजियारी गोरे तन सेत सारी मोतिन के माल सो जुन्हैया जनु बाढ़ी है ॥ आलम सो आलो बनमाली चल देख दुति कनक सुगढ़ की सी रूप गुन गाढ़ी है। देह की दमक वाके चीर की चमक मानो छीरनिधि मथि कैधौं चन्द मथि काढ़ी है ॥ ७२ ॥

सोरह कला को चन्द पूरन मुखारबिन्द सोरह सिङ्गार किये सोरह बरस की। आभरन

बारह कनक बानी बारह की बारहो चरन चूमे चोप कंज रस की ॥ आठो दन्त चौकनसों आठो अङ्ग हीरा हार आठहू बरंगना सो विधिना सरस की। चार खग चार मृग चार फल कीसी छबि चार भुज आरत निकाई है दरस की ॥७३॥

जमुना के आगमन मारग में मारुतन भौंरन की भीरनि पटे से लखि पाये हैं। सन्तन सुकवि सुख खान पदमिनी तेरे रूप के तरङ्गनि अनंग दरसाये हैं ॥ बाहर कढ़न कहैं तोसों ते अयानी कौन लैहै बदनामी घर घर घर छाये हैं। पट की लपट लपटति ता दिना ते आज मनो उन गलिन गुलाब छिरकाये हैं ॥ ७४ ॥

हारहो के भार उर भार ना सँभारे नारि अलप अहार रस बस के अहार है। सीरेते सिरात ताते ताती ह्वैह्वै जाति डोले पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ॥ कहै कवि आलम न रतिहू न रम्भा औन मैन का घृताची ऐसी रूप की अपार है। बानिक विचित्र और चित्र मैं न ऐसी कोऊ चित्र लिखि पूतरी जियाई करतार है ॥ ७५ ॥

लहलही लहरैं लुनाई की उदित अंग उचकै कुचन कैसी कांचुकी यों गचकी । मन्द पग ध-रति मद करि गयन्द गति चन्द्रमुखी चांदनी चकित चाह सचकी ॥ कैसे घनश्याम वह बाम बन धाम आवे घाम के लगे ते कामलता जाति पचकी । अति सुकुमार मिसकत भार हारन के बारन के भार कइ बार लंक लचकी ॥ ७६ ॥

पलिका ते पांय जो धरति धाम धरनी में छाले परे पग सांझ पैंडहि गवन तें । लीने जो तमोल तौ तो ताप आवे बलि भद्र होत है अ-रुचि पान पीक अचवन तें ॥ बारन के भार और चीरहू के तम भार यातें नहीं बाम होती बाहिरे भवन तें । लागे जो समीर तौ तो पूर परे सौतिन के फूल ज्यों उड़त अलि पंख के पवन तें ॥ ७७ ॥

चरन धरे न भूमि बिहरै जहांही तहां फूले फूल फूलन बिछाई परजङ्क है । भार के डरन सु-कुमार चारु अंगन में अंग ना लगावे राज के-सर को पङ्क है ॥ कवि मतिराम लखि बाता-यन बीच मुख आतप मलीन होत बदन मयंक

है। कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन पावै बि-
जन बयारि लगे लचकत लङ्क है ॥ ९८ ॥

इति छबि वर्णन ॥

—✲✲✲—

अथ केलि कला वर्णन ॥

नथ की चलन कल किङ्किनी कलन हिय हार की हलन छबि उरज उतंग की। लंक की लचक परजंक की मचक इत उत की हचक रंग रचक सुभंग की ॥ स्वेद की झलक भरि नेह की छलक कबिराम जू ललक कोक मदन बिहङ्ग की। जोम की जमक बिपरीत की गमक तहां तिय की हुमक अरु कुमक अनङ्ग की ॥ १ ॥

दम्पति सुरति बिपरीत में रमत सब कोक की कलानि के अखिल अवधारे हैं। भनत क-बिन्द बिहसत बतरात सतरात अंग अंगन अनंग रंग भारे हैं। उचटी ललाट तें समेत बेंदी मांग मोती पर्यो केस पासन इमि उरझारे हैं। बदन नछत्र पति छत्रपति हुकुम ते कूद मनो तम पै सितारे बांधि तारे हैं ॥ २ ॥

रति बिपरीत रंग रसिक बिहारी संग अंग देखे प्यारी के अनंग हरषत है। आसन बिधान

कै बिवेकन बलित चाल त्यों ही लाल कोक की कलानि करषत है ॥ भनत कबिन्द्र हार टूटे श्रम जल छूटे सौतिन को भीजत सोहाग सरषत है । मांग मोती माल कूं कूं श्याम पै सुढार गिरि इंदु मानो तम पर तारे बरषत है ॥ ३ ॥

प्यारी बिपरीत रति करै प्यारे पीतम सों दुहुंन के अंगन अनंग हेर हरखै । भनत कबिन्द बेनी पीठही पै परी डोलै पन्नगी सुबाह हेम ब-ल्लकी सो करखै ॥ नख रद खगडन चतुर नारि चुंवन के सीवी करै पीवे त्यों न सीवी प्रेम परखै । भाल ते उचटि स्वेदकन परै कुचन पै इंदु मानो ईस पै सुधा के बुन्द बरखै ॥ ४ ॥

सजल जलद पर दामिनी लसत कैधों का-मिनी को रूप रतिपति मो हरत है । बदन सु-रत पिय मुख सो जुरत कैधों कमल के फूल सों कलानिधि मिलत है ॥ मगडन सुकबि श्रम स्वे-द तें सलिल होत देह तें निकसि निज नेह पिग-लत है । टूट टूट मोती सांस फूलतें गिरत कैधों मेरे जान तरनि तरैया उगलित है ॥ ५ ॥

जीति रति कामहिं करति रस रीति तहां

प्रीतम ते दृहू रचि बिपरीत रति है। मची सि-
सकार रसना की झनकार जहां संभु मुख च-
न्द्रमा की छबि छलकति है॥ कटि लफि लफि
लचकत कच भारन सों हारन तें ओरे उर ओप
उलहति है॥ पीठ पर बेनी मृगनैनी के लुरत
मानो नागिनी सुमेरु के सिला पै लहरति है।६।

सांवरे रसिक रस बस त्रिपरीत रची प्यारी
के लजौहे नैन मन को हरत हैं। मन्द मन्द मे-
खला की धुनि सुनि दत्त कवि चेटुआ मरालन
के मन पकरत हैं। झूमती हैं अलकैं छबीली मुख
ऊपर यों मानो बाल व्याल सुधा चन्द तें भरत
हैं। टूट टूट श्रम जल बुन्द यों परत मानो कनक
लता तें मुकताहल झरत हैं॥ ७॥

फैलि रहे चहूं दिसि चिकुर समूह घन बर-
षंत सलिल सुमन बुन्द भारी है। टूट उछलत
मुकताहल बलाक दल भूषन सबद मोर घोर
अनुकारी है॥ प्रफुलित गात सब ललित कद-
म्बन बदम्बन के अङ्क इंदु बधू छबि धारी है।
आनँद बितान मई लता उलहत मानो प्यारी
बिपरीत रति पावस निकारी है॥ ८॥

लचकै ललित लङ्क मचकैं उरोज ऊंचे हचकै हमेल तिय हियन परै परै। नैनन को चाप धरे मूंद मुख सांस करै फिर फिर अङ्क भरै मिलत गरै गरै॥ श्रीपति सुहात बारिजात से बदन पर रूप सरसात छूटें मुकता लरै लरै। मेरे जान कातिक को पून मयंक पर चहुंघां नखत माल गेरत हरै हरै॥ ९॥

सौ करन प्रिया को बसी करन पी को श्रम सी करन मोचियत पति सुख भूल कै। मेखला के रव मान मेख लागी देन के सुखदेव नूपुर झलका तैसे झूल कै॥ श्यामा के लजौहैं नैन सोहैं श्याम नैनन के खुलत मुदित त्यों त्यों खुलत अतूल कै। जान कै उदैत इंदु भासमान को समान कोस मानो होति इन्दीवर फूल फूल कै॥ १०॥

छूटत लपट लपटत फिर छूट छूट थकत न दोऊ विहरत बड़ी बेर कै। लङ्क लचकत अङ्क भरत निसङ्क परजङ्क पर राखि मुकताहल के ढेर कै॥ ता समै कहत संभु गौरी के गरे ते टूट छूट चलो सुरत करत फेर फेर कै। कुच बीच अटको विराजत है हार मानो धसी गङ्गधार फेर सिखर सुमेर के॥ ११॥

लागी है रचन बिपरीत रति बाल वह मानि कै वचन निज बालम सपथ को। कोक की कलानि माहि सिव कवि प्रेम बस पूरन मनोरथ करति मनमथ को ॥ खसित उझकि झकि श्रवन समीपन तें जटित जवाहिर तय्योना बहु गथ को। मानहुं अकास ते प्रकास कर भास पास टूट्यो टूक ह्वै है चक्र चन्द्रमा के रथ को ॥ १२ ॥

रगमगी सेज पर जगमगी शोभा चारु मनिमय मन्दिर मयूखन अथाह की। उदै नाथ तामे प्रान प्यारी अरु प्यारे लाल कोक की कलान केलि करत सराह की ॥ किङ्किनी की धुनि तैसी नूपुरन नाद सुनि सौतिन के बाढ़त निखाद पीर दाह की। त्रिभुवन जीति के उछाह की बजत मानो नौबत रसिली मनमथ पातसाह की ॥ १३ ॥

राधा बन माली संग करत अनंग ऐस चित्र चहूं यां याम फूलन के ढेर की। उदै नाथ सुकवि लोकाई सखी श्रौनन की किङ्किनी झनक काम नौबत कै जेर की ॥ मोतिन को हार चारु लटको कुचन पर अटको यों डोलो करै शोभा

घन घेर की। पांत पांत ह्वै कर नछत्र सब देत मानो पुन्य हेतु पूरन प्रदच्छिना सुमेर की ॥ १४ ॥

रति विपरीत रची दम्पति गुपति अति मेरे जान मान भय मनमथ नेजे तें। कहै पद्माकर पगी यों रस रंग जामे खुल गे सुअंग सब रंगन अमेजे तें॥ नीलमनि जटित सुबेंदा उच्च कुच पै पयो है टूट ललित ललाट के मजेजे तें। मानो गिस्यो हेमगिरि शृङ्ग पै सुकेलि करि कढ़ि के कलङ्क कलानिधि के करेजे तें ॥ १५ ॥

बाल बैस बाल कोक रति में कुसल अति कीनी रति पति विपरीत को उनोत है। वपुकर नाह सुक नैन मूंदे बलिभद्र देखे मुख सुख भयो मोद को उदोत है। एते में पकर दोऊ पानतान राखे भाखे मृदु मृदु बैन जैसे कूजत कपोत है। टूटो मोती मांग ते सिँदूर भरो राजे अति मानो तारा मण्डल ते तारापात होत है॥ १६ ॥

कबि पजनेस केलि मन्दिर चिराक माल पन्नन के परम प्रभा सी प्रभा फूटि फूटि। हीरन जटित जेबदार परजङ्क पर दोऊ रहे रति विपरीत सुख लूटि लूटि॥ दुरद दुरेफन के दर ते

ढरत स्वच्छ सुमन गुलाब दल छबि जुत छूटि छूटि। प्रफुलित कंज दल दीरघ दृगी के मृदु मुख महताब तें परे से परें टूटि टूटि ॥ १७ ॥

कवि पजनेस केलि मधुप निकेत नव दर मुख दिव्य घरी घटिका लटी की है। विधु पर बेख चक्र चक्र रवि रथ चक्र गोमती के चक्र च-क्रताक्रत घटी की है॥ नीवी तट त्रिवली बली पै दुति कोस तुगड कुगडली कलित लोम ल-तिका बुटी की है। उपटी की टीकी प्रभा टीकी वधूटी की नाभि टीकी धूर्जटी की वो कुटी की संपुटी की है ॥ १८ ॥

पौन सो उसास श्रासु बुन्द बारिधारा स्वेद बक पांति मोती लर कारी घटा कैस है। नग पुखराज पन्ना मानिक श्री नीलम को जगमग जोति जुरि धनुष सुरेस है॥ गरजन श्राहि कगठ ठुनक मयूर धुनि चपला चमक टीका टिकुली सुबेस है। मेरे जान लाल श्राज प्रथम समागम सो प्यारी तेरे श्रानन पै पावस प्रबेस है ॥ १९ ॥

बाम अलबेली श्याम सङ्ग केलि मन्दिर में ठानी विपरीत रीत सुखद इकन्त पाय। छूटे बार टूटे हार बिलुलित भो सिंगार तन को न है सँभार छाकी रति रङ्ग छाय॥ रसिक बिहारी प्रान प्यारी छबि प्यारी लगै चन्दन की बेंदी मिली गोरे मुख ना लखाय। मैन मदमत्त भुज भरत अनँग जङ्ग ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरत जाय॥ २०॥

उछलि उछाहन सों ऊधम अनोखो नाधि बरसो अनंद मन भावन के मनपर। कहै पदमाकर कपोलन पै आऐ ढुरि छाए कनसेद सोहाए उरजन पर॥ हारि मानि प्यारी विपरीत के विहार लगि सिथिल सरीर रही सांवरे के तनपर। मांनहुं सकेलि केलि केतिको कलाको करि थाकी है चला की चंचला की घोर घनपर॥ २१॥

श्याम की सहेली जो लों पीछे प्रान लेत रही तो लों बड़ भागी आगे अमृत अचै रही। काहे को सु छाड़े वाकी काम आस पूर भई गैल जात पाये लाल लालचन लै रही॥ अनत

अचिन्त पाये मोहन महल आये हिये सो लगाये दोऊ बांह बीच दै रही। रस कुव लैहै रानी राधिका की सेज सजि बीच चोर ही को मोर बन्द बल कै रही॥ २२॥

कीनी जानु आसन में दुलही सरासन सी गरे भुजपास सो पकर छबीली को। कालिदास ललक लपेटि लेति दामिनि ज्यों श्याम घनदुति तन गर गरबीली को। गहत कठोर कुच कुं-कुम कनक रंग चुम्बन करत अङ्ग अङ्ग चटकीली को। मैन मद दूम दूम तूल सम तूम तूम लेत मुख चूम चूम राधिका रसीली को॥ २३॥

आजु केलि मन्दिर में छके रंग दोऊ बैठे केलि करैं लाज छोड़ि रंग सो जहकि जहकि। सखी जन कहत कहानी हरिचंद तहा नेह भरी केकी कोर पिक सो चहकि चहकि॥ एक टक बदन निहारै बलिहार लैलै गाढ़े भुज भरि लेत नेह सो लहकि लहकि। गरे लपटाय प्यारी बार बार चूमि मुख प्रेम भरी बातैं करै मद सो बहकि बहकि॥ २४॥

आज कुञ्ज मन्दिर अनन्द भरि बैठे श्याम

श्यामा संग रंगन उमंग अनुरागे हैं। घन घह-रात बरसात होत जात ज्यों ज्यों त्यों हों त्यों अधिक दोऊ प्रेम पुञ्ज पागे हैं॥ हरीचंद अलकैं कपोलन सिमिटि रही बारि बुन्द चुअत अतिहि नीके लागे हैं। भीजि भीजि लपटि लपटि स-तराय दोऊ नील पीत मिलि भये एकै रंग बागे हैं॥ २५॥

राधिका रसीली काम सील में जसोली गुन गरब गसीली गरो गहत गुपाल को। कालि-दास मृग मद पान पायकर रंग फूली फूल का-लित ललित बनमालको॥ पियत पियारी दोऊ अधरन धरि धरि अधर मधुर मधुसूदन सुलाल को। रंग रसहू में सब छुकै रंगहू में कर दै कर कपोल मुख चूमै नंदलाल को॥ २६॥

साजित पलंग पै उमंग भरी अँग २ रंग २ बसन सँवार पैन्हे सुच पै। मोतिन के छड़े पड़े कानन मैं सानदार हीरन के हार बेना बन्दनी सरुच पै॥ ग्वाल कबि कहै तहां राजत रसिक लाल ख्याल में बिसाल मन आयो अति उच पै। नैन लगै प्यारी ओर ओठ लगै प्याले कोर

जोय लग्यो रति ओर हाथ लगे कुच पै ॥ २७ ॥

आये प्रान प्यारे पाये रहसि रसीली बाम दौरि महि कानी ओम जंग के झपट सी । रसिक बिहारी मुख चुमि गल बांह डारी पिय हिय लागी लोह चुम्बक चपट सी ॥ परसि कपोल प्यारी करि करि प्यार हेरै कनि भुज भरै सहि मैन के दपट सी । ज्यौं त्यौं सियराति गुलाबन की छुही सी छाती त्यों त्यों लपटाति तिय पावक लपट सी ॥ २८ ॥

सोये गुरुजन दोए जागत हैं निस सभै राखी बहराय तौ लों बातन बतर कों । कुचन के छुवे सब अंगहू थरथराय लोचन मुदित कीनें अम्बर पतर कों । बल्ली भो बलित यों छलित छूटो रस रूप भीनी रति रंग पिय सुन्दर सतर कों । कैधों खगराज सेज छीरद के बीच पर धरी व्याल छौनन की कुण्डली कतर कों ॥ २९ ॥

कुन्दन की छरी आबनूस की छरी सो लगी सोनजुही मिली कैधों कुवलय हार सों । कैधों चंद्र चंद्रिका कलङ्क सो कलित भई कैधों रति ललित बलित भई मार सों ॥ कालिदास का-

दम्बिनी दामिनी मिली है कैधों अनल की ज्वाल धस गई धूम धार सों। केलि समै कामिनी क-न्हैया सों लपटि गई कैधों लपटानी है जुन्हैया अन्धकार सों ॥ ३० ॥

मुखौ रूख मोरै देति घूघरी न छोरै देति चूमिबो न भौरै देति बदन मयङ्क को। लाजन ते चूनरी लपेटति न गोवैछरै रै गरै रोवैछटै छिलको न अङ्ग को ॥ भनत कविन्द लाल कर को परस होत धर को मिटै न सरसाई बाल संक को। जकर जकर जाधैं सकर मकर परै पकर पकर पानि पाटी परजङ्क को ॥ ३१ ॥

आली केलि मन्दिर में ल्याई छल बल करि प्यारे पेखि पकरी उछरि परजङ्क तें। भनत क-विन्द कैसे थिर रहै थोरी बैस पारद को रद कै चपलताई संक तें ॥ नीवी कर धारि रही झ-नक बगारि रही झलक पसारि रही बदन मयंक ते। लाल भुज भरी बाल ऐसी तरफरी हाल जाल की सी सफरी उछरि परी अङ्क तें ॥ ३२ ॥

ल्याई केलि भवन भोराइ भोरी भामिनी को फूल गन्ध कै परस कीनी पौन रुख ते।

कलित बसन कस तन कुच कमनीय लीनो गहि पीतम प्रसून सेज सुख तें ॥ कवि पजनेस भुज भरत हहा के हिय सौहो कै समेटि सांस नीवी दाबि दुख तें। आह करि उकरी सचोट पन्नगीसी ऐंठ उमठ अरीरी मैं मरीरी कढ़ी मुख तें ॥ ३३ ॥

ल्याई केलि मन्दिर तमासा को बताय छल बाला ससि सूर के कला पै किये दावा सी। धाइ ताहि गहन चहत हरिचन्द जू के घूमि रही घर में चहूंघा करि कावा सी ॥ धोखा दैकै अङ्क मे भरत अकुलानी अति चञ्चल चपल सी लखानी मृग छावा सी। आहि करि मिमकि सकोरि तन मोरि पिय करतें छटकि छूटी छलकि छलावा सी ॥ ३४ ॥

बैठी बिधुबदनी कृसोदरी दरीची बीच खीच पी निसङ्क परजङ्क पर लै गयो। पजन सुजान कवि लपटी लला के गरे झपटी सु नीवी कर जङ्गन समै गयो ॥ गोरो गोरो भोरो मुख सोलै रति पीत भात रति क्रम रक्त ह्वै कै अन्त सो रजै गयो। मानो पोखराज तें पिरोजा भयो मानिक भो मानिक भये पै नीलमनि नग ह्वै गयो ॥३५॥

(मध्या) चैत चांदनी के कैधों चन्द अवलोकन ते छोर निधि छीरकेसपूर पूर उमगे। कहै चिन्तामनि मन आनँद मगन ह्वै कै बिहरि हँसति सु परम प्रेम सो पगे ॥ अधखुली अखियां सुरत सुख रस बस मानो भोर अधखुले कमलन में खगे। प्यारी के सकल तन श्रम जल बुन्द सोहैं कनक लता में मुकता फल मनो लगे॥ ३६ ॥

साटन के मुरुख बिछौना बिछि सेज पर रङ्ग भेज भेज मन मौज को निसा करै। अतर बिना हीं तिय तन में अतर भाम मतर उरोजन पै गोटन को मांकरै ॥ ग्वाल कवि प्यारेलाल नीवी को बढ़ायो कर सरकि चली सो आगे आवन चहां करै। आंगुरी ते ना करै जु भौंह ते मना करै सु नैनन में हां करै पै मुखते न हां करै॥३७॥

अञ्चल के खैंचे चल करति दृगञ्चल को चञ्चला ते चञ्चल चलै न भजि द्वारे को। कहै पद्माकर परै सो चौक चुम्बन में छलन छपावै कुच कुम्भन किनारे को॥ छाती के छुयेते परै राती सी रिसाय गलबाहीं के किये पै करै नाहियै उचारे को। ही करति सीतल तमासे तुंगती करति सो करति रति में बसीकरति प्यारे को॥ ३८ ॥

पौन कर कूटी बन्द बूटी सी बधूटी देव टूटी मोती मांग छूटी छहरैं सरप सो। अंग अंग आ-रम सुधा रस सरस प्यारी अंग अंग आय कर आतप अरप सो॥ मुखचन्द चन्द्रिका उदित रति मन्दिर में नीली घन पीली स्याम दामिनी दरपसी उचकी उचांकी चकिते सी सोसमन्दिर तें कन्द-रप दर्प दावानल के झरप सो॥ ३९॥

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अ-धखुले वेष नख रेखन के झलकैं। कहै पदमाकर नवीन अधनीवी खुली अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं॥ भोर जगी प्यारी अध ऊरध इते की ओर झांकि झुकि झमकि उघारि अध पलकैं। आंखैं अधखुली अधखुली खिरकी ह्वै खुली अध-खुले आनन पै अधखुली अलकैं॥ ४०॥

लामी लामी लटैं लोनी लटकत लंक लौलौं लीक लागि लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूट गए सकल सिंगार हार टूटि गल लूटि गए ल-पटि भुअंग अंग कोरि कोरि॥ सकुचि सयानी अँगिरानी प्रान प्यारी बाल प्यारे जसवन्त के नि-कट तन तोरि तोरि। चोरि चोरि चित हित

जोरि जोरि लाड़िले सो छोरि छोरि कंचुकी ज-
म्हात मुख मोरि मोरि ॥ ४१ ॥

बिकसत जात जाको बारिज बदन बेस बि-
बिध बिनोदबारे भावन भरति है। निरखि न-
खच्छत उरोजन पै लागे परिहास के सकोचन
चलति पकरति है। कहै हनुमान मनभावनि
सुलोचनी के जागे की खुमारी अँखियान बिह-
रति है। प्यारी की उनींदी वा अटारी उतरनि
आज चढ़ि रही चितना उतरति है ॥ ४२ ॥

(प्रौढ़ा) सुखद सुबास परजङ्क पर राजै
उभै झूमि ललचाय मुख चुम्बन लहत है। द्विज
बलदेव मुसुकात जात खात पान परसि पयोधर
हरख उमहत है। फूले ना समाते बिपरीत रस
माते उर हार सुरझाते अध उरध रहत है। सि-
थिल सरीर बाल बिथल परे हैं मानो सोने स्याम
सरिता में पन्नग बहत है ॥ ४३ ॥

राति रतिरंग में रसीली अरसीली बैठी सेज
में बिलोके सौहैं आदरस धरि के। बेनी कबि
बेनी के खुले हैं कच मेचक वे खेंच पेंच छाए
मुख मण्डल बगरि के ॥ तिन में अरूझे सीस

फूल सो अतूल छबि प्यारी सुरझावै लीन्हे ऐसे कर करि कै। बांधो तम बन्धन बिलोकि दिनकर मानो प्रात अरबिन्दन छुड़ायो बंधु लरिकै ॥४४॥

रचि बिपरीति रति प्रीतम की प्रीति प्यारी जामै अति छाजे कोक सकल कलान को। कबि हरिकेस बिगलित केस बेस दुति गलित करति अहि ललित ललाम को॥ लचकत कटि मचकत किङ्किनी की कल हासी सी करत है मराल अबलान को। कर ताम रसन समक जब गहै प्यारी प्यारे के मिटत टेव सकल कलान को ॥ ४५ ॥

करि रति रंग पति संग ते अलोनी प्रात उठी अँगरात आंपैं उलही अपार है। भनत कबिंद छूटे सकल सिंगार है न सौत मुखतार है निहारे टूटे हार है॥ फबि रही कलित कपोलन पै पीक लीकें बलित नखच्छत उरोजन अगार है। मुर रही बेसर सिकुर रही सारी अंग फुर रही आलस निथुरि रहे बार हैं ॥ ४६ ॥

अन्धकार धूमधार समर सकूटे बार बिथुरे बिथुरि रति अन्त सेज पर में। कालीदास स्याम संग सोई रस बस बाम काम की सी नीकी बाम

काम केलि घर में॥ नवला को नाभी कोहुनी दै कान्ह कुच गहि सोए जोए रतन अँगूठी सोहै कर में। मेरे जान कारो नाग बामी तें निकारि फन राख्यो मनि मण्डित सुमेरु के सिखरमें ॥४७॥

चहचही चुभकै चुभी है चौक चुंबन की लह लही लांबी लटैं लपटी सुलङ्क पर। कहै पदमाकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सुआँगी है उरोजन के अङ्क पर॥ सोई सरसार यों सुगन्धन समोई सेज सीतल सुलोने कोनि बदन मयङ्क पर किन्नरी नरी है कै परी है छबिदार परी टूटि सी परी है कै परी है परजङ्क पर ॥ ४८ ॥

(परकीया) सोए सब लोग तुम आए भले जोग मध्यो बिरह बियोग उर आनँद निपट के। काहूको न डरो परजङ्क में लै परो परिरम्भ प्यारे करो तुम्हें कैसे कोऊ हटके॥ लीलाधर पीतपट न्यारे करि धरो परिहरो बनमाल जौन नेकहू न अटके। डेहरि के वा तरफ केहरि ननद परी है हरि सँभारो पग जेहरि न खटके॥ ४९ ॥

आली केलि मंदिर के आस पास ठाढ़ी सुनै प्यारी बनमाली की बनक बतियान की। का-

लिदास परम हुलासन मैं अंकभरे लाल लीनो आसन मे नवला लजान को ॥ अति अलबेली को नवल रति कूजतन सुनि चली अवली किलकि सखियान की । मची एक बेरही खनक चुरियान की घनक घुघुरून की झनक झंबियानकी ॥

गोकुल में गोपिन गोबिन्द संग खेली फाग रात भर प्रात समै ऐसी छवि छलकैं । देहैं भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद भरे नैनन कछुक झपैं झलकैं ॥ लाली भरे अधर बहाली भरे मुखपर कवि पद्माकर विलोकैं को न ललकैं । भाग भरे लाल औ सोहाग भरे सब अंग पीक भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं ॥ ५१ ॥

(गनिका) मालना जुही की नीकी चम्पा को कली की फीकी जलज जमात जैबदार पान पनतें । कुन्दन की शोभा मुन्द सब सरदार रूप मञ्जरी न मञ्ज, गही हाडू गञ्ज गन तें ॥ मालती निवारी क्यारी सेवती बिचारी बरी काहल कहारी देह जारी जात जन तें । आली चाह चाली चित हित की खुसाली आवै माली हाथ डाली लै गुलाब गुलसन तें ॥ ५२ ॥

कुचन न देति छाती छवि सों छबीली नारि कौतुक अनेक करै नींद मैं समोई है। कहै कवि दूलह त्यों परसे न पावै पीय भुकि भहराय पट तानि देह गोई है॥ बय को कलेस सहै पै ना रति रंग चहै तिय के चरित्र मित्र जानत न कोई है। पहले अनूढ़ा भई ब्याहे पर ऊढ़ा भई गौने में नवोढ़ा ह्वैके पीके साथ सोई है॥ ५३ ॥

आरस सों आरत सम्हारत न सीस पट गजब गुजारति गरीबन की धार पर। कहै पदमाकर सुगन्ध सरसावे सुचि बिथुरे बिराजें बार हीरन के हार पर॥ छाजत छबीले छिति छहरि छरा के छोर भोर उठि आई केलिमन्दिर के द्वार पर। एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे एक कर कंज एक कर है किवार पर॥ ५४ ॥

इति श्री मनोजमञ्जर्य्या प्रथम कलिका समाप्तः॥

—०००—